4.13 आलोचना

यद्यपि रूसो के काम एमिल को आधुनिक शिक्षा पर सबसे बड़े काम के रूप में घोषित किया गया है, महिलाओं की शिक्षा पर उनके विचारों की कड़ी आलोचना हुई है। रूसो का मानना था कि महिलाओं को पुरुषों के समान शिक्षा नहीं मिलनी चाहिए। वह महिलाओं को चरित्र और स्वभाव में पुरुषों के बराबर नहीं मानते थे। उन्होंने यह भी कहा कि वह एक महिला को अपनी पत्नी के रूप में पसंद करेंगे जो कि समझदार महिला की बजाय भोली हो, जो सदन में अध्यक्ष की तरह काम करे। महिलाओं के प्रति रूसो की इस तरह की कठोरता ने नारीवादियों से गंभीर नाराजगी अर्जित की है। मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट ने महिलाओं के अधिकारों के प्रतिशोध में रूसो पर गंभीर हमला किया है और कहा है कि अगर महिला का काम केवल पुरुष को खुश करना है, तो समाज तर्क के बहुत निचले स्तर पर है। उनका कहना है कि जिस महिला की भूमिका केवल घरों और परिवार तक ही सीमित है, वह पूर्ण स्नेह और सार्वजनिक जिम्मेदारी की पूर्ण भावना विकसित करने में सक्षम नहीं है। वह एक गुणी और सशक्त नागरिक के रूप में भाग नहीं ले सकती। वोलस्टोनक्राफ्ट का मत है कि एक महिला जो अपना जीवन यापन करती है, वह भी स्वाभिमान और गरिमा अर्जित करती है। वह महिलाओं के लिए उसी तरह की शिक्षा की मांग करती है जैसे रूसो पुरुषों को देता है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को शिक्षित करने और उनके गुणों को विकसित करने से मां और पत्नी के रूप में उनकी भूमिका में कोई बाधा नहीं आती है। वह बल्कि कहती है कि नम्र पत्नियाँ अंत में मूर्ख माताएँ होंगी। उनका तर्क है कि महिलाओं को पुरुषों पर शासन करने के लिए नहीं, बल्कि स्वयं पर अधिकार करने के लिए सशक्त किया जाना चाहिए। महिलाओं को खुद को तर्कसंगत प्राणी के रूप में विकसित करने के लिए समान अवसर दिए जाने की आवश्यकता है ताकि वे भी सफल पेशेवर बन सकें।

रूसो के शिक्षा सिद्धांत की नारीवादी आलोचना के अलावा अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं पर भी उनकी आलोचना की जाती है। नकारात्मक शिक्षा की उनकी अवधारणा शिक्षाविदों को अच्छी नहीं लगी है। उनका मानना है कि बच्चे नकारात्मक शिक्षा में सकारात्मक गुण पैदा नहीं कर पाएंगे जो उनके जीवन को समृद्ध और पर्याप्त बना देगा। उनके अनुशासन के सिद्धांत को भी चुनौती दी गई है, क्योंकि आलोचकों का मानना है कि बच्चे को सिर्फ मुक्त छोड़ने से सकारात्मक अनुशासन विकसित नहीं हो पाएगा।

किताबों में उपलब्ध किसी भी उपयोगी ज्ञान के रूसो के इनकार पर भी सवाल उठाया जाता है, क्योंकि किताबें ज्ञान का खजाना हैं। पुस्तकों में बहुत सारी महत्वपूर्ण जानकारी, घटनाएँ, राय और अंतर्दृष्टि होती है जो दुनिया की एक विस्तृत तस्वीर देती है। पूर्ण स्वतंत्रता एक आदर्शलोक दर्शन है क्योंकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली और छात्रों की बड़ी आबादी प्रत्येक बच्चे पर ध्यान देने की अनुमति नहीं देती है। साथ ही, शिक्षक को दी जाने वाली माध्यमिक भूमिका भी संभव नहीं है क्योंकि बच्चे को सकारात्मक दिशाओं के लिए अपने जीवन में किसी मार्गदर्शक, संरक्षक की आवश्यकता होती है।

रूसो की तुलना प्लेटो से की गई है। ऐसा कहा जाता है कि रूसो आधुनिक शिक्षा के लिए खड़ा है, प्लेटो प्राचीन शिक्षा के पक्षधर थे। शिक्षा और स्वतंत्रता की उनकी अवधारणा दुनिया भर के कई शिक्षकों के लिए एक मार्गदर्शक है।

बोध प्रश्न 4

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की जाँच इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) शिक्षा पर रूसो के सिद्धांत का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.14 सारांश

यह इकाई रूस द्वारा उदार शिक्षा की आलोचना करने के कारण बताती है। उनका कहना था कि उदार शिक्षा एक अलग–थलग व्यक्ति का निर्माण करती है जो अपने पर्यावरण, अपने परिवार और दोस्तों और खुद से भी अलग–थलग हो जाता है। बच्चे को प्रकृति से दूर चार दीवारों के भीतर पढ़ाया जाता है और वह एक प्राकृतिक बंधन विकसित करने में सक्षम नहीं होता है। उदार शिक्षा ने मनुष्यों के मन को गुलाम बना लिया है और उन्हें भौतिक लालच के लिए इस हद तक धकेल दिया है कि वे अपने गुणों को भूल गए हैं और एक भ्रष्ट जानवर के रूप में तब्दील हो गए हैं। उदार शिक्षा ने असमानता के बीज बोए हैं और एक पदानुक्रमित और अनुचित समाज का निर्माण किया है जो शक्तिशाली और मजबूत को विशेषाधिकार देता है। पुरुषों द्वारा बनाए गए कानून भी असमानता को संस्थागत रूप देते हैं। रूसो नैतिक शिक्षा का दावा करता है ताकि बच्चा उदारता, विनम्रता और सहयोग के मूल्यों को स्थापित करे।

रूसो ने अपने काल्पनिक काम एमिल के माध्यम से एक लड़के और लड़की की कहानी सुनाई और प्रत्येक के लिए एक शिक्षा प्रणाली तैयार की ताकि वे एक पूर्ण जीवन जीने में सक्षम हो सकें। वह नकारात्मक शिक्षा के विचार को सामने रखता है जहां बच्चा अपने दिमाग का विकास करता है और शिक्षक पर निर्भर नहीं होता है। वह प्राकृतिक शिक्षा भी देना चाहते थे जहाँ बच्चा प्राकृतिक वातावरण में अपनी प्रतिभा का विकास करे।

रूसो बच्चे के विकास के चरणों के अनुसार एक शिक्षा प्रणाली तैयार करते है। पहले चरण में जब बच्चा 5 साल की उम्र तक बड़ा होता है, तो वह बच्चे के लिए केवल शारीरिक और भावनात्मक विकास की सलाह देता है। दूसरे चरण में, जब बच्चा 5 से 12 वर्ष की आयु के बीच होता है, तो वह नकारात्मक शिक्षा की सिफारिश करता है जहां बच्चा निर्णय और तर्क विकसित करने के लिए अपनी इंद्रियों को प्रशिक्षित करता है। उनका कहना है कि शारीरिक गतिविधि, सादा आहार और हल्के कपड़ों की पूरी आजादी होनी चाहिए। तीसरे चरण में जब बच्चा 12–15 वर्ष के बीच होता

है, रूसो ने बौद्धिक विकास पर जोर दिया और अध्ययन के लिए प्राकृतिक विज्ञान, भौतिक विज्ञान, परिवहन, बैंकिंग, व्यापार, गणित भूगोल, इतिहास, मैनुअल और औद्योगिक प्रशिक्षण आदि का सुझाव दिया। इसका उद्देश्य बच्चों में ज्ञान प्राप्त करने की जिज्ञासा जगाना था। चौथे चरण में जब बच्चा किशोरावस्था प्राप्त कर लेता है और 15–20 वर्ष के बीच होता है, तो वह हृदय के प्रशिक्षण पर जोर देता है क्योंकि मन, शरीर, इंद्रियाँ और हृदय संपूर्ण मनुष्य का निर्माण करते हैं। इसलिए , वह जुनून पर नियंत्रण बनाने के लिए नैतिक, सामाजिक और धार्मिक शिक्षा की सिफारिश करता है।

रूसो की शिक्षा प्रणाली के लिए अपनाया गया अध्यापन अनुभव और अवलोकन से सीखना है। उन्होंने बच्चे के व्यवहार में सुधार के लिए दंड के बजाय सकारात्मक अनुशासन का सुझाव दिया। एमिल पुस्तक के अंतिम भाग में उन्होंने महिलाओं को दी जाने वाली शिक्षा के बारे में लिखा है। वह उनके लिए एक निष्क्रिय और दमनकारी प्रशिक्षण निर्धारित करता है। वह नैतिकता और धर्म की शिक्षा का सुझाव देता है जो पारिवारिक मूल्यों के निर्वाह के लिए सहायक है। मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट ने महिलाओं के लिए शिक्षा के अपने विचार के लिए अपनी पुस्तक विन्डिकेशन ऑफ राइट्स ऑफ वुमन में अत्यधिक आलोचना अर्जित की है। वह कहती हैं कि जो महिलाएं घरों तक सीमित रहती हैं, वे एक सद्गुणी और सशक्त नागरिक के रूप में भाग नहीं ले सकतीं। रूसो की नकारात्मक और प्राकृतिक शिक्षा की अवधारणा की भी आलोचना की गई है। रूसो की शिक्षा प्रणाली की व्यापक रूप से सराहना की गई है और उन्हें आधुनिक शिक्षा का जनक माना जाता है।

4.15 संदर्भ

- झा, शेफाली. (2018). *पॉलिटिकल थॉट – फ्रॉम एनशिएंट थीक्स टू मार्डन टाइम्स.* नोएडा. पियर्सन इंडिया एजुकेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड.
- मुखर्जी, सुब्रत और रामास्वामी, सुशीला. (2011). *ए हिस्ट्री ऑफ पॉलिटिकल थॉट – प्लेटो टू मार्क्स.* नई दिल्लीः पीएचआई लर्निंग.
- नेल्सन, ब्रायन आर. (1996). *पॉलिटिकल थॉट – फ्रॉम सोकरेटस टू द ऐज ऑफ आइडियालजी.* इलिनोइसः वेवलैंड प्रेस.
- स्ट्रॉस, लियो और जे क्रॉप्सी. (1987). *हिस्ट्री ऑफ पालिटिकल फिलासफी.* शिकागोः विश्वविद्यालय प्रेस.

4.16 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रकाश डाला जाना चाहिए
   - अनुभव और सीखने पर आधारित होगी शिक्षा
   - ज्ञान का स्रोत बाहरी नहीं बल्कि आंतरिक होना चाहिए
   - यह असमानता के बीज बोता है और उसे उसकी स्वाभाविकता से वंचित करता है

बोध प्रश्न 2

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रकाश डाला जाना चाहिए
   - प्राकृतिक शिक्षा की अवधारणा
   - नकारात्मक शिक्षा की अवधारणा

बोध प्रश्न 3

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रकाश डाला जाना चाहिए
   - बच्चे के विकास के चरणों के अनुसार तैयार पाठ्यक्रम पर चर्चा करें
   - शिक्षण के विभिन्न तरीके

बोध प्रश्न 4

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रकाश डाला जाना चाहिए
   - नारीवादी दृष्टिकोण
   - शिक्षाविदों का दृष्टिकोण

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY